सर सैयद अहमद खान के शैक्षिक विचार एवं योगदान

डॉ0 आलिया खातून,

असिस्टेन्ट प्रोफेसर–शिक्षा शास्त्र विभाग,
मथुरा पी0जी0 कालेज रसड़ा,बलिया,
जननायक चद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

शोध सार

सर सैयद अहमद खान उन्नीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री, समाज सुधारक और महान शैक्षिक विचारक थे । ये भारत के सुनहरे भविष्य के लिए सदैव संघर्षरत रहे एवं इसके लिए उन्होने भारत में शैक्षिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में सुधार के लिए अथक प्रयास किया । उन्होने शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाओं को बनाने पर बल दिया तथा पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान की पुस्तकों को भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिए विशेष प्रयास किए, जिससे कि आम जनता पाश्चात्य आविष्कारों और विचारों का लाभ ले सके । प्रस्तुत शोधलेख में सर सैयद अहमद ख़ान के शैक्षिक विचारों और योगदानों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है । इस शोध लेख का उद्देश्य सर सैयद अहमद ख़ान के विचारों एवं वर्तमान समय में उनके शैक्षिक दृष्टिकोण की उपादेयता को सामने रखना है ।

कुंजी शब्द – *शिक्षा, पाश्चात्य ज्ञान, क्षेत्रीय भाषा, साइंटिफिक सोसाइटी*

भारतीय नव जागरण के महान, विचारक, समाज सुधारक एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले व्यक्तित्व सैयद अहमद खान का जन्म 17 अक्तूबर 1817 में दिल्ली के एक प्रतिष्ठित और शिक्षित परिवार में हुआ था । जब वह बाईस वर्ष की आयु के थे, तभी उनके पिता का देहांत हो गया, तथा परिवार के भरण पोषण हेतु उन्होने ईस्ट इंडिया कंपनी में विभिन्न पदों पर काम किया। मगर वह लगातार अंग्रेजों की नीतियों की आलोचना करते रहे, और विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में ब्रिटिश सरकार द्वारा जो भी नीतियाँ भारतीय जनता पर थोपी जा रही थीं, उसका उन्होने अपने लेखों द्वारा मुखर विरोध किया गया । सन 1857 की क्रांति के पश्चात अंग्रेजों ने अपने अत्याचारों को और बढ़ा दिया । इस क्रांति में सर सैयद के परिवार पर भी बहुत अत्याचार हुए जिससे वह बहुत व्यथित हो गए थे, परंतु कुछ समय के पश्चात वह फिर से उठ खड़े हुए और देश और समाज की सेवा में लग गए । देश एवं समाज के लिए कार्य करते हुए 27 मार्च 1898 में अलीगढ़ में सर सैयद अहमद खान ने इस संसार को अलविदा कह दिया ।

देश की स्थिति

उस समय एक तरफ तो देश की स्वतन्त्रता के लिए आंदोलन चल रहे थे, दूसरी ओर गरीब, अशिक्षित वर्ग (किसान, मज़दूर,कारीगर, दस्तकार) आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक अत्याचार का शिकार हो रहे थे । इन लोगों की कहीं भी सुनवाई नहीं हो रही थी। अधिकांश जमींदार ,साहूकार अंग्रेजों की चापलूसी में लगे हुए थे । इसके अतिरिक्त वह भारतीय मुस्लिम समाज की दयनीय स्थिति और शैक्षिक पिछड़ेपन से भी बहुत चिंतित थे । सर सैयद अहमद खान ने सभी भारतीयों के साथ मुस्लिम समाज की अशिक्षा और

ग़रीबी दूर करने के लिए विशेष ध्यान दिया,उन्होने एक बार कहा था "मैं समस्त भारतीय ,क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम सब की भलाई चाहता हूँ"।

सर सैयद अहमद खान का शिक्षा के बारे में विचार एवं योगदान

सर सैयद अहमद खान अपनी नौकरी के कारण पूरे प्रदेश में स्थानांतरित होते रहे और वो जहां भी गए, शिक्षा और समाज के लिए कार्य करते रहे। सर सैयद अहमद खान ने पाश्चात्य खोजों और विज्ञान से प्रभावित थे और वह चाहते थे कि इसका लाभ सर्वसाधारण को मिले। इसी उद्देश्य कि पूर्ति के लिए सर सैयद अहमद खान ने 1864 में गाजीपुर में साइंटिफ़िक सोसाइटी की स्थापना की । जिससे पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान जो सबके लिए हितकर है, सभी तक पहुंचे । इसके अतिरिक्त 1866 में सर सैयद अहमद खान ने ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य उत्तर–पश्चिम की जनता की आवाज़ ब्रिटिश पार्लियामेंट तक पहुंचा कर ब्रिटिश सरकार का ध्यान उन नीतियों और कानूनों की ओर करना था जो देश और जनता की भलाई के लिए न हों ।

सर सैयद अहमद खान प्राच्य– पाश्चात्य विवाद के बारे में कहते हैं कि इस समस्या के समाधान के लिए केवल एक ही पक्ष पर बल देना ठीक नहीं है, बल्कि इस समस्या के समाधान के लिए मध्य मार्ग चुनना चाहिए ।

सर सैयद ने 1867 में ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन के अंतर्गत दस सदस्यों के हस्ताक्षर के साथ एक विस्तृत और सशक्त तर्कयुक्त रिपोर्ट सरकार को भेजी जिसमें उत्तर पश्चिम के जिलों में एक वर्नाकुलर (क्षेत्रीय भाषा में) विश्वविद्यालय खोले जाने का सुझाव था । इसमें यह मांग की गयी थी कि पठन पाठन का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएँ हों । इस रिपोर्ट के महत्व को इस प्रकार समझा जा सकता है कि राष्ट्रीय आर्काइव के शैक्षिक रिकॉर्ड (1963)में यह स्वीकार किया गया है कि इस रिपोर्ट ने ब्रिटिश सरकार में शिक्षा की समस्याओं पर एक बड़ी बहस की शुरूआत कर दी, जिस पर लगभग बीस वर्षों तक वाद विवाद चलता रहा इसके परिणाम स्वरूप सन 1882 में पंजाब विश्वविद्यालय (अब पाकिस्तान में) और सन 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई ।

सर सैयद अहमद खान ने 1869 में अलीगढ़ इंस्टीट्यूट प्रेस से एक पंफलेट 'पब्लिक एडुकेशन इन इंडिया' प्रकाशित किया जिसका उद्देश्य था कि अंग्रेज़ अफसरों तक सर्व साधारण को शिक्षित करने के सुझाव पहुंचा सकें और उस समय जो सरकार की शिक्षा योजना में कमियाँ हैं उन पर उनका ध्यान आकृष्ट कर सकें। उन्होने इसमें लिखा कि मैकाले की शिक्षा योजना की बड़ी ही प्रशंसा गयी है, मगर यह आम जनता के लाभ के बजाय कार्यालयों में कम वेतन वाले लोगों को तैयार कर रही है।

पंफ्लेट 'पब्लिक एडुकेशन इन इंडिया' में सर सैयद ने निम्नलिखित सुझाव दिये –

- ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो सबके लिए हो न की मुट्ठी भर लोगों के लिए
- ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो भारत को पाश्चात्य ज्ञान और विज्ञान से संपर्क कराए
- जो वर्तमान के साथ–साथ भविष्य कि आवश्यकताओं को ध्यान में रखे ।
- ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो क्षेत्रीय हो विदेशी न हो ।
- ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो लोगों में प्रगतिवादी विचार और समझ पैदा करे ।
- ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो राष्ट्रीयता को बढ़ावा देती हो ।

- ऐसी शिक्षा व्यवस्था हो कि जब अंग्रेज़ भारत से चले जाय तब भी हमारे साथ रहे,और उपयोगी हो ।
- शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषा हो, न कि अँग्रेजी ।
- उच्च शिक्षा में शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय और अँग्रेजी दोनों हो सकता है और बालक अपनी इच्छानुसार माध्यम चुने मगर दोनों डिग्रियों को एक समान माना जाय ।
- उच्च कोटि की पुस्तकों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया जाय ।
- ऐसी शिक्षा हो जिससे देश की संस्कृति का विकास हो, और लोगों में वैचारिक स्वतन्त्रता उत्पन्न हो ।

सर सैयद अहमद खान ने शिक्षा को व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्र के विकास की कुंजी माना है, और शिक्षा के बारे में अपने विचार अपने लेखों और भाषणों में रखे हैं । सर सैयद अहमद खान के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य "मनुष्य के अंदर छुपी हुई योग्यताओं को बाहर लाना और उसे राष्ट्र और समाज के निर्माण के लिए उपयोग में लाना है" । "शिक्षा का मुख्य अर्थ और उद्देश्य ये है कि लोग श्रेष्ठ और भले नागरिक हो जाय'।

उनका शिक्षा के बारे में एक कथन यह भी है कि "शिक्षा एक ऐसी वस्तु है जो सत्य सिखाने, आचरण सही करने, जीवन का रास्ता बतलाने, लोगों के साथ समन्वय करने, अपने और दूसरे का अधिकार पहचानने में मदद करे" ।

उन्होने अपनी एक पुस्तक लंदन में लिखी जिसका नाम था "स्ट्रक्चर्स अपॉन द प्रजेंट एजुकेशनल सिस्टम इन इंडिया" इस पुस्तक में उन्होने प्रारंभ ही इस कथन से किया–'भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था बिना लाभ की और बेकार है बल्कि उस समय तक बिना लाभ की और बेकार रहेगी जब तक उसमें प्रभावी और लाभकारी परिवर्तन न किए जाएँ'।

सन 1875 में उन्होने मुहम्मडेन एंग्लो ओरिएंटल कोलीजिएट स्कूल खोला, जो बाद में आगे चल कर 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में विख्यात हुआ, और वर्तमान समय में भी यह विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहा है ।

शिक्षा के क्षेत्र में सर सैयद अहमद खान के सुझाव

सर सैयद अहमद खान ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए बहुत से प्रयास किए और सुझाव भी दिये जो इस प्रकार हैं –

- **शिक्षा का माध्यम**

  सर सैयद अहमद खान ने मैकाले की शिक्षा नीतियों का विरोध किया । उनके अनुसार शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएँ होनी चाहिए, न कि एक विदेशी भाषा । सर सैयद अहमद खान का कथन था कि अँग्रेजी एक नयी भाषा है जिसे समझने और पढ़ने में छात्र जीवन का एक बड़ा भाग व्यर्थ जाएगा, और जब वह शिक्षा पूर्ण करके निकलेंगे तो जीविकोपार्जन हेतु उनके पास ब्रिटिश सरकार के कार्यालयों में क्लर्क की नौकरी के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा । इसके अतिरिक्त उन्हों ने कहा कि दूसरी और नई भाषा में शिक्षा लेने से सोचने और समझने की क्षमता का विकास अपनी भाषा में शिक्षा ग्रहण करने की अपेक्षा कम होता है । जिससे भारतीय युवाओं में नए और रचनात्मक विचारों का विकास ठीक से नहीं हो सकेगा । सर सैयद अहमद खान के अनुसार इससे नई नई बौद्धिक विचारधाराओं का जन्म नहीं हो सकेगा । 'अगर शिक्षा भारतीय भाषा में नहीं दी जाएगी तो कभी भी भारत में

शिष्टता और पालन–पोषण का उच्च स्तर नहीं मिलेगा, यही सच है,यही सच है, यही सच है ' ।

- **पाश्चात्य वैज्ञानिक ज्ञान का प्रसार**

सर सैयद अहमद खान पाश्चात्य आविष्कारों और विज्ञान से बहुत ही प्रभावित थे । रेल, डाक, पानी के नल,गाड़ियाँ सभी से भारतीयों के ह्रदय में पाश्चात्य तकनीक और खोजों से अंग्रेजों की धाक बैठ गई । सर सैयद अहमद खान का मानना था कि पश्चिमी ज्ञान–विज्ञान और नए आविष्कारों को आम हिंदुस्तानी तक पहुँचना चाहिए, जिससे वह लाभ उठा सकें और विश्वपटल पर सभी देशों के साथ खड़े हो सकें । इसी उद्देश्य कि पूर्ति हेतु सर सैयद अहमद खान ने 1864 में गाजीपुर में साइंटिफिक सोसाइटी की स्थापना की । इसके द्वारा सर सैयद अहमद खान ने पाश्चात्य ज्ञान– विज्ञान की पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने का प्रयास किया । सोसाइटी का नियम था कि यह सोसाइटी धार्मिक पुस्तकों को नहीं छापेगी और सभी धर्मों के लोग इसके सदस्य हो सकेंगे। यह कहा जा सकता है कि उस समय भारत में वैज्ञानिक विचारों और ज्ञान के प्रसार में साइंटिफ़िक सोसाइटी ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । सर सैयद अहमद खान के अनुसार भारत को तत्कालीन समय में नए पाश्चात्य ज्ञान (विशेषकर नेचुरल साइन्स, पॉलिटिकल इकॉनमी, इतिहास) की आवश्यकता है , जिसकी शिक्षा भारतीय भाषा में होनी चाहिए । जिससे सर्व साधारण में वैज्ञानिक दृ ष्टिकोण उत्पन्न हो सके ।

- **सर्वसाधारण के लिए शिक्षा**

सर सैयद अहमद खान का प्रयास था कि शिक्षा देश की आम जनता तक पहुंचाई जाय , विशेषकर उन लोगों तक जिन तक शिक्षा का प्रकाश पहुंचा ही नहीं । उन्होने उस समय के परिदृश्य को देख कर कहा कि अगर अँग्रेजी शिक्षा कुछ ही लोग प्राप्त कर सकते हैं तो वे राष्ट्र के विकास में बहुत योगदान नहीं कर सकेंगे । वह मैकाले की शिक्षा नीति के प्रबल विरोधी थे। वे मानते थे कि इस प्रकार की शिक्षा का प्रभाव बहुत सीमित है, और आम जन की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है और इस प्रकार से शिक्षित ओग समाज में कोई व्यापक सकारात्मक बदलाव नहीं ला सकते ।
उनका कथन था' हमारी इच्छा यह है कि बजाय कुछ व्यक्तियों के समूहों को लाभ हो, चरित्रता और राष्ट्रीय बुद्धिमत्ता का उपहार सबके लिए हो'। सर सैयद को कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि अशराफ़ (उच्च जाति) के लोगों को अरज़ाल(निम्न जाति) के लिए अलग अलग शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए । इस बात को सर सैयद अहमद खान ने पूरी तरह नकार दिया और सभी को एक साथ और एक प्रकार की शिक्षा दिये जाने का समर्थन किया । उन्होने कहा कि जो लोग ऐसा चाहते हैं व अपने बच्चों के लिए अलग स्कूल खोल लें।

- **भारतीय संस्कृति की रक्षा**

सर सैयद अहमद खान का विचार था कि भारत की अपनी एक सांस्कृतिक पहचान है, एक राष्ट्रीयता है, जो सदैव रहेगी । अगर अंग्रेज़ सरकार इसे पूरी तरह बदलना चाहती है तो यह असंभव है । उनके अनुसार किसी भी राष्ट्र या समाज और उसकी समाजिकता को एक पेड़ कि

तरह कान्ट दृछांट कर अपने अनुसार कोई रूप नहीं दिया जा सकता । तो शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जो कि भारत की संस्कृति को मजबूत कर सके, इसका विकास करे न कि इसे पूरी तरह बदल दे । सर सैयद अहमद खान के अनुसार भारतीय जनता को ऐसी शिक्षा दी जाय जिससे वह अपनी राष्ट्रीय संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए पाश्चात्य एवं यूरोपीय ज्ञान प्राप्त करें।

- **वर्तमान एवं भविष्य के लिए उपयोगी शिक्षा**

सर सैयद अहमद खान ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो व्यक्ति एवं समाज के लिए उपयोगी हो। उनके लिए केवल शिक्षित होना ही काफी नहीं था, बल्कि समय एवं परिस्थितियों के अनुसार हो ।

सर सैयद अहमद खान का कहना था कि "जो शिक्षा आवश्यकताओं के अनुसार न हो, वह व्यर्थ है। ''एक स्थान पर उन्होने कहा "गरीबी का मूल कारण अज्ञानता है, और व्यर्थ का ज्ञान (जो लाभकारी न हो) प्राप्त करने वाला और अज्ञानी दोनों एक समान हैं।''

उनके अनुसार शिक्षा का स्तर जैसा होगा, व्यक्ति जीवन के क्षेत्र में उतना ही सफल होगा। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा अगर आवश्यकताओं के अनुसार होगी वह व्यक्ति को हर क्षेत्र में सफल बनाएगी ।

- **धार्मिक शिक्षा**

सर सैयद अहमद खान का विचार था कि हर धर्म के बच्चों को घर से ही धार्मिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। जिससे कि प्रारम्भ से ही उसका नैतिक और चारित्रिक विकास सही दिशा में हो। वह किसी सरकारी विद्यालय में धार्मिक शिक्षा के विरोध में थे । उनके अनुसार यदि हर धर्म (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई आदि) के लोगों के द्वारा अपने बालकों को धर्म की शिक्षा दी जाय तो समाज में नैतिक या चारित्रिक समस्याओं का कुछ स्तर तक अंत होगा ।

- **महिला शिक्षा**

कुछ लोगों को यह भ्रम है कि सर सैयद अहमद खान महिला शिक्षा के विरोधी थे, हालांकि यह एक भ्रम मात्र ही है । चूंकि उस समय समाज में महिलाओं को विशेषकर मुस्लिम महिलाओं को घर से बाहर निकलने के अवसर कम मिलते थे, उनके लिए सर सैयद अहमद खान ने सुझाव दिया कि यदि वे पढ़ना चाहती हैं तो उनके लिए योग्य महिला शिक्षिकाएँ नियुक्त की जाएँ जो उनके घर जा कर उन्हें पढ़ाएँ या उनके लिए ऐसे विद्यालय खोले जाय, जहां लोग अपनी बालिकाओं को इस विश्वास से भेजें कि उन्हें वहाँ सुरक्षित वातावरण मिलेगा । यह बात आज के परिदृश्य में भले ही विचित्र लगे परंतु उस समय महिला शिक्षा की अलख जगाना बहुत कठिन कार्य था।

वर्तमान समय में सर सैयद अहमद खान के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता बहुत अधिक है । सर सैयद अहमद खान ने मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का सुझाव दिया था,जब कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी यही बात कही गयी है कि बच्चे मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को तेज़ी से सीखते और समझते हैं । इसके अतिरिक्त सैयद अहमद खान ने वर्तमान एवं भविष्य के लिए उपयोगी शिक्षा पर बल दिया जिसकी प्रासंगिकता सदैव ही रहेगी । धर्म और विज्ञान को साथ लेकर चलना, नैतिक विकास की शिक्षा, संस्कृति का संचयन और

अग्रसारण , शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण आदि ऐसे बिन्दु हैं जिनकी सार्थकता कभी भी समाप्त नहीं होगी । शिक्षा के क्षेत्र में इतने सराहनीय एवं अविस्मरणीय कार्य करने के लिए भारतीय शिक्षा जगत में सैयद अहमद खान के योगदानों को याद रखा जाना चाहिए ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अब्दुल्लाह ,गुलशन "तालीम ए निसवाँ, सर सैयद अहमद ख़ान और अलीगढ़ तहरीक" , उर्दू दुनिया , अक्तूबर 2017 , क़ौमी उर्दू काउंसिल ,नई दिल्ली
- आलम, जावेद "सर सैयद का तसव्वुर ए तालीम" आजकल, अक्तूबर 2017, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
- आलम, इफ़्तिखार (2017) . 'सर सैयद का नज़रिया ए तालीम" एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
- Naik, J.P. (1963) Selection from Educational Records of the Government of India, vol. II Development of University Education 1860-87 , National Archive of India, DELHI
- Allam, M. 2018. "Interpreting Educational Vision of Sir Sayed Ahmad Khan in the Twenty- first Century". Kindle edition, universal book house, Aligarh